जो चलता है उसको नमन

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

चलता है उसको नमन एक ऐसा विषय हैं जो चरैवेति–चरैवेति की महीमा का गुणगान करता है। जो चलता है अर्थात् पुरुषार्थ करता है, उसको मंजिल अवश्य मिल जाती है। किन्तु जो हांथ पांव नहीं हिलाता, दूसरे के भरोसे बैठा रहता है उसका जीवन निष्क्रिय हो जाता है। ऐसा व्यक्ति समाज पर भार स्वरूप हो जाता है। अच्छा काम करने पर अच्छा परिणाम और बुरा काम करने पर बुरा परिणाम प्राप्त होता है। जो बीज हमने बोया है उसका फल पाने के लिए हमे तैयार रहना चाहिए। पूर्वजन्म के कर्म के अनुसार जो फल प्राप्त होता है वह अर्जित है। इस मानव भव के पूर्व भी अनेक जीव योनियों में मनुष्य का संचरण हुआ है। उन जीव योनियों में जैसा कर्म किया गया है उसका भी फल वर्तमान जीवन में मिलता रहता है। जो उत्कट कर्म विपाक होता है उसका फल बहुत शीघ्र ही प्राप्त हो जाता है। मानव की सोच पर बहुत कुछ निर्भर करता है। जैसा हम सोचते हैं उस दिशा में पुरुषार्थ प्रारम्भ कर देते है। नमन करने योग्य वह व्यक्ति होता है जो सत्पुरुषार्थ के द्वारा लक्षित मंजिल को प्राप्त करता है। पुरुषार्थी व्यक्ति कभी दुःखी नहीं होता। वह पुरुषार्थ करता रहता है और पुरुषार्थ के अनुसार परिणाम मिलता रहता है। जो विद्यार्थी अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए प्रयास करता है उसे पद और प्रतिष्ठा प्राप्त हो जाती है और जो भाग्य के भरोसे बैठकर पुरुषार्थ नहीं करता भाग्य भी उसका साथ नहीं देता।

भारतीय संस्कृति में सेवा को बहुत महत्व दिया गया है। सेवा अहंकार को नष्ट कर देती है। समाज में सभी के साथ अच्छा व्यवहार होना चाहिए। किसी बात पर तत्काल प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं करनी चाहिए। प्रतिक्रिया विरति की अपेक्षा मौन धारण करना अच्छा है। तटस्थता की नीति अच्छी है। किसी से राग–द्वेष नहीं करना चाहिए। निःस्वार्थ भाव से सेवा करनी चाहिए। भारतीय संस्कृति का मूलपरक सूत्र है– चलते रहो, चले रहो, प्रयत्न करते रहो। जल यदि एक स्थान पर स्थित रहता है तो उसमें बदबू आने लगती है परन्तु यदि जल बहता रहता है तो उसमें शुद्धता, निर्मलता और सुन्दरता बनी रहती है। प्रकृति हमें यह शिक्षा देती है कि सदैव

आगे बढ़ते रहना चाहिए। एक चींटी दिवाल पर बार–बार चढती है और गिरती है किन्तु वह हार नहीं मानती। वह बराबर प्रयास करती रहती है और दिवाल पर चढ़कर अपने मंजिल को प्राप्त कर लेती है। प्रयत्न करने से मनुष्य को पीछे नहीं हटना चाहिए। मुख्य रूप से यह सूत्र विद्यार्थियों पर अधिक लागू होता है। विद्यार्थी को अपने मंजिल को प्राप्त करने के लिए दूरदृष्टि और पक्का इरादा रखना चाहिए। असफलता से कभी भी हार नहीं माननी चाहिए। असफलता को जीतने का प्रयास करना चाहिए। जो व्यक्ति हार मानकरके रुक जाता है उसका भाग्य भी वही रुक जाता है। भाग्य के भरोसे बैठकर कभी भी रुकना नहीं चाहिए।

संसार में जितने भी महापुरुष हुये हैं, उन्होंने चरैवेति–चरैवेति का सूत्र अपने जीवन में लागू किया। इसी का परिणाम है कि वे महान् कहलाये। जितने भी महान् लोग हुए हैं बचपन में उन्हें घोर कष्ट का सामना करना पड़ा हैं लेकिन उन्होंने कष्टों के सामने हार नहीं मानी, बल्कि कष्टों पर विजय प्राप्त की। भारत के वर्तमान प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र भाई मोदी का जीवन भी इस संबंध में अवलोकनीय है। जीवन के प्रारंभिक समय में उन्हें कैसी–कैसी आपदाओं का सामना करना पड़ा यह भारतीय लोगों से छिपी नहीं है। वह स्वयं भी बहुत बड़े कर्मयोगी है। एक छोटे से गरीब परिवार में उत्पन्न होकर भारत जैसे देश के प्रधानमंत्री पद को अलंकृत किया है यह उनके दृढ़ विश्वास का परिणाम है। उनके द्वारा जीवन क्षेत्र में किया गया पुरुषार्थ उनके मार्ग को प्रशस्त किया है। उन्होंने कठिनाइयों को कभी अपने ऊपर भारी नहीं होने दिया बल्कि कठिनाइयों को जीतकर उस पर विजय प्राप्त की। जीवन में आगे बढ़ने के लिए पुरुषार्थ बहुत आवश्यक है। लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए समयबद्ध प्रयास होना जरूरी है। समय–समय पर कार्य की समीक्षा भी करते रहना चाहिए।

आज का युग प्रतिस्पर्धा का युग है। विज्ञान अथवा तकनीकी क्षेत्र में मनुष्य ने अभूतपूर्व उन्नति की है। परन्तु बहुत कम ही लोग ऐसे होते हैं जिन्हें जीवन में वांछित वस्तुएं प्राप्त होती हैं अथवा अपने जीवन से वे संतुष्ट होते हैं। हममे से अधिकांश लोग जिने मनवांछित वस्तुएं प्राप्त नहीं होती हैं, वे स्वयं की कमियों को देखने के बजाय भाग्य को दोष देकर मुक्त हो जाते हैं। भाग्य भी उन्हीं का साथ देता है जो स्वयं पर विश्वास करते हैं, जो अपने पुरुषार्थ के द्वारा अपनी कामनाओं की पूर्ति पर आस्था रखते हैं, वही व्यक्ति जीवन में सफलता के मार्ग पर

अग्रसित होता है। पुरुषार्थी अथवा कर्म पर विश्वास करने वाला व्यक्ति जीवन में आने वाली बाधाओं और समस्याओं को सहजता से स्वीकार कर उसका निवारण करने का प्रयास करता है। कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी वह विचलित नहीं होता। जीवन संघर्ष में वह निरंतर अग्रसित होता है। कुछ लोग ऐसे होते हैं जो भाग्य भरोसे बैठे रहते हैं। ऐसे व्यक्ति थोड़ी सी सफलता अथवा खुशी मिलने पर अत्यन्त प्रसन्न हो जाते हैं और थोड़ी सी कठिनाई आने पर विचलित हो जाते हैं। ऐसे व्यक्तियों से सफलता बड़ी दूर रहती है।